24-8-67 ओम शान्ति रात्रीक्लास

बच्चो ने रुहानी सर्विस समाचार सुना। जिन-2 मे ज्ञान होगा उनको तो जरूर दिल होती होगी कि हम जाकर कोई का कल्याण करे कोई को दाम बढावें। समझाना तो कोई भी डिफीकल्ट बात नही है। बाकी याद मे रहना इस मे डिफीकल्टी तो। माया भुला देती और ताप ले जाती है। इसको ही कहा जाता है हार। माया याद नही रहने देती है। विघ्न डालती रहती है और जीत लेती है। इसको ही कहा जाता है हार।

यो तो है बहुत सहज। मनुष्य तो चाहते भी है कि नई दुनियाँ जरूर आवे जल्दी आवे। राम राज्य स्थापन हो जावे तो अच्छा ही है। तुम्हारे पास तो चित्र भी है। तो समझाना है कि राम राज्य किसको कहा जाता है। राम राज्य सतयुग का बाप ही दे सकते है। बहुतो के दिल मे आता होगा कि हम प्रदर्शनी मे जाकर समझा सकते है। चित्रो पर समझाना तो बहुत ही आसान है ना। इनका राज्य था तो और कोई का राज्य था ही नही। पहले-2 तो यही है फिर बाद मे वृधी होती गई है। स्वर्ग मे तो आदमी थोड़े होते है शान्त होती है। ल-न के चित्रो पर तुम बहुत अच्छा समझा सकते हो। फिर यह पुनर्जन्म मे भी जरूर आते है। 84 जन्मो बाद फिर से सतो से तमोप्रधान बन जाते है। इस समय जरूर भिन्न-2 ही कोई नाम रूप मे होगे। फिर उनको सतोप्रधान बनना है। सिखाने वाला तो बाप के सिवाय और कोई हो ही नही सकता है। शिव बाबा इन के बहुत जन्मो के अन्त के जन्म मे प्रवेश करते है। बाप कहते है कि मै तो पुराने तन मे प्रवेश करता हूँ इनकी आत्मा अपनी भी है। फिर मै प्रवेश करता हूँ तो नाम दूसरा रखना पडे। नही तो फिर ब्रह्मा कहाँ से आवे? चित्रो पर समझाना तो है ही कि ब्रह्मा द्वारा ... विष्णु द्वारा ... ऐसे नही कि समझानी नही देनी है। नही तो त्रिमूर्ति है नही ठहरी। बाबा यह समझाते है कि शंकर का पार्ट कुछ भी है ही नही। ड्रामा अनुसार पुरानी दुनियाँ का विनाश होना ही है। ऐसे क्यो कहे कि फलाने द्वारा होता है। बाकी चित्र मे रखना तो जरूर है। बाप जिस तन मे प्रवेश करते है उनकी तो आत्मा आत्मा अपनी है। परमात्मा प्रवेश करते है तो इनका नाम ब्रह्मा रखते है। पुराने तन का नाम ब्रह्मा नही है। तुमको निश्चय है कि हम ब्राह्मणो को बाप से वर्सा मिलता है। इतने सभी ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ है। कोई भी पूछे कि यहाँ पर क्या मिलता है? क्या बनने जाते हो? कहाँ जाते हो? बोलो हम विश्व का मालिक बनते है। भारत ही पहले तो विश्व का मालिक था फिर 84 जन्म लिया। फिर अभी भारत को विश्व की दैवी बादशाही मिल रही है। बाप द्वारा 21 जन्मो का स्वराज्य मिल रहा है ऐसे तो बोर्ड पर भी लिख सकते हो। हम फिर से यह पद पा रहे है। इनके चित्र पर ही बहुत समझा भी सकते है। हो सकता है कि यहाँ पर भी म्यूजियम खुल जावे। समझाने लिये बच्चो को भेजते रहे। अगर कोई पुरुषार्थ करे तो यहाँ पर सेन्टर जल्दी खुल सकता है। परन्तु ऐसा कोई है नही जो कि पुरुषार्थ करे। एक न एक दिन कोई निकल ही पडेगा जो कि पुरुषार्थ करेगा। जमीन भी ले सकते है। खास अहमदाबाद मे दिलवाला मन्दिर पर समझा सकते है। यह हमारा ही यादगार है। 5000 वर्ष पहले वैकुण्ठ की स्थापना हुई थी। और लडाई भी तभी की। गुजरातियो को बहुत समझा सकते है। अहमदाबाद से यहाँ पर बहुत आते है। सर्विस बहुत हो सकती है। राजकोट मे भी सेन्टर खुलना है। जामनगर भी बॉम्बे मे है। राजाये भी है। हमारा तो ज्ञान ही है राजाओं को महाराजा बनाने का। तो समझाना होता है कि आपने राजाई गँवाई है फिर भी पा सकते हो। हमको तो आप पर तरस पडता है। हम भी राजयोग सीख रहे है। भावनगर मे राजा ओपनिंग करता है तो उनको समझाना है कि डबल सिरताज धारी बनना है तो राजयोग सीखो। बाबा समझाते तो बहुत है कि ऐसे-2 करो। परन्तु अभी बल ही नही है तो कर ही नही सकते है। बडो-2 की सर्विस करने का अभी बल आया नही है। बल ही से सब कुछ होता है। बल ही से विश्व की बादशाही मिलती है। बच्चो मे देहअभिमान भी बहुत है तो ज्ञान का भी अभिमान तो बहुत है। बच्चो को देही अभिमानी होना चाहिये। याद से ही शक्ति मिलती है। और लेनी है। जब जबर होगा तो ही कोई की समझ मे भी आवेगा। अ